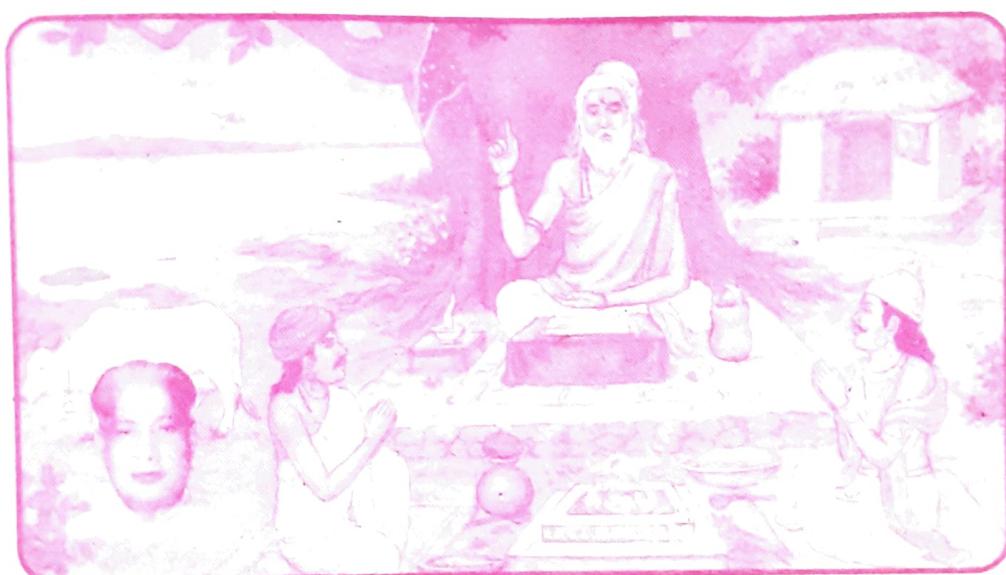


श्री दुर्गा स्तुति पाठ प्रारम्भ

काव्य विशारद श्री चमन लाल जी भारद्वाज 'चमन' अमृतसरी

पहला अध्याय

विशारद
भारद्वाज
चमन



दोहः वन्दो गौरी गणपति शंकर और हनुमान।
राम नाम प्रभाव से है सब का कल्याण।

गुरुदेव के चरणों की रज मस्तक पे लगाऊं।
शारदा माता की कृपा लेखनी का वर पाऊं।
नमो 'नारायण दास जी' विप्रन कुल श्रंगार।
पूज्य पिता की कृपा से उपजे शुद्ध विचार।
वन्दू सन्त समाज को वन्दू भगतन भेख।
जीनकी संगत से हुए उल्टे सीधे लेख।
आदि शक्ति की व दना करके शीश नवाऊं।
सप्तशति के पाठ की भाषा सरल बनाऊं।
क्षमा करें विद्वान सब जान मुझे अन्जान।
चरणों की रज चाहता बालक 'चमन' नादान।

घर घर दुर्गा पाठ का हो जाये प्रचार।
आदि शक्ति की भक्ति से होगा बेड़ा पार।
कलियुग कपट कियो निज डेरा, कर्मों के वश कष्ट घनेरा।



चिन्ता अग्न में निस दिन जरही।
प्रभु का सिमरण कबहुं न करही।
यह स्तुति लिखी तिनके कारण।
दुःख नाशक और कष्ट निवारण।
मारकंडे ऋषि करे बखाना।
संत सुनई लावे निज ध्याना।
सवारोचिप नामक मनवतर में।
सुरथ नामी राजा जग भर में।

राज करत जब पड़ी लड़ाई, युद्ध में मरी सभी कटकाई।
राजा प्राण लिए तब भागा, राज कोष परिवार त्यागा।
सचिवन बांटयो सभी खजाना, राजन मर्म यह बन में जाना।
सुनी खबर अति भयो उदासा, राजपाठ से हुआ निराशा।
भटकत आयो इकबन माहिं, मेधा मुनी के आश्रम जाहिं।

मेधा मुनि का आश्रम था कल्याण निवास।
रहने लगा सुरथ वहां बन संतन का दास।
इक दिन आया राजा को अपने राज्य का ध्यान।
चुपके आश्रम से निकल पहुंचा बन मे आन।

मन में शोक अति उपजाये, निज नैन से नीर बहाये।
पुरममता अति ही दुःख लागा, अपने आपको जान अभागा।

मन में राजन करे विचारा, कर्मन वश पायो दुःख भारा।
रहे न नौकर आज्ञाकारी, गई राजधानी भी सारी।
विधनामोहे भयो विपरीता, निश दिन रहूं विपन भयभीता।
देव करोगे कबहुं सहाई, काटो मोरि विपदा सिर आई।
सोचत सोच रहयो भुआला, आयो वैश्य एकतेहिं काला।
तिनराजा को कीन प्रणामा, वैश्य समाधि कहयो निज नामा।

दोहा :-

राजा कहे समाधि से कारण दो बतलाये।
दुखी हुए मन मलिन से क्यों इस वन में आए।
आह भरी उस वैश्य ने बोला हो बेचैन।
सुमिरन कर निज दुःख का भर आये जलनैन।

वैश्य कष्ट मन का कह डाला, पुत्रों ने है घर से निकाला।
छीन लियो धन सम्पत्ति मेरी, मोरी जान विपत ने धेरी।
घर से धक्के खा वन आया, नारी ने भी दगा कमाया।
सम्बन्धी र्खजन सब त्यागे, दुख पावेगें जीव अभागे।
फिर भी मन में धीर न आवे, ममतावश हर दम कल्पावे।

दोहा :-

मेरे रिश्तेदारों ने किया नीचों का काम।

फिर भी उनके बिना न आये मुझे आराम।
सुरथ ने कहा मेरा भी ख्याल ऐसा। अप्सरतास
आराम
असुर
तुम्हारा हुआ ममतावश हाल जैसा। असुर

चले दोनों दुखिया मुनि आश्रम आए।

चरण सिर निवा कर वचन ये सुनाए।

ऋषिराज कर कृपा बतलाइये गा।

हमें भेद जीवन का समझाइये गा।

जिन्होने हमारा निरादर किया है।
हमें हर जगह ही बेआदर किया है।
लिया छीन धन और सर्वस्व है जो,
किया खाने तक से भी बेबस है जो।

ये मन फिर भी क्यों उनकों अपनाता है।
उन्हीं के लिए क्यों यह घबराता है।



हमारा यह मोह तो छुड़ा दीजिये गा।
हमें अपने चरणों लगा लीजिये गा।
बिन्ती उनकी मान कर, मेधा ऋषि सुजान।
उनके धीरज के लिए कहे यह आत्म ज्ञान।

यह मोह ममता अति दुखदाई, सदा रहे जीवों में समाई।
पशु पक्षी नर देव गन्धर्वा, ममतावश पावे दुख सर्वा।
गृह सम्बन्धी पुत्र और नारी, सब ने ममता झूठी डारी।
यद्यपि झूठ मगर न छूटे, इसी के कारण कर्म है फूटे।
ममतावश चिड़ी चोग चुगावे, भूखी रहे बच्चों को खिलावे।
ममता ने बांधे सब प्राणी, ब्राह्मण डोम ये राजा रानी।
ममता ने जग को बौराया, हर प्राणी का ज्ञान भुलाया।
ज्ञान बिना हर जीव दुःखारी, आये सर पर विपता भारी।
तुमको ज्ञान यथार्थ नाही, तभी तो दुख मानों मनमाही।

लोहा :-

पुत्र करे माँ बाप को लाख बार धिक्कार।
मात पिता छोड़े नहीं फिर भी झूठा प्यार।

योग निन्द्रा इसी तो ममता का है नाम।
जीवों को कर रखा है इसी ने बे आराम।
भगवान् विष्णु की शक्ति यह, भक्तों की खातिर भक्ति यह।
महामाया नाम धराया है, भगवती का रूप बनाया है।
ज्ञानियों के मन को हरती है, प्राणियों को बेवस करती है।
यह शक्ति मन भरमाती है, यह ममता में फँसाती है।
यह जिस पर कृपा करती है, उसके दुःखों को हरती है।
जिसको देती वरदान है यह, उसका करती कल्याण है यह।
यही ही विद्या कहलाती है, अविद्या भी बन जाती है।
संसार को तारने वाली है, यह ही दुर्गा महांकाली है।
सम्पूर्ण जग की मालिक है, यह कुल सृष्टि की पालिक है।

लोहा:-

ऋषि से पूछा राजा ने कारण तो बतलाओ।
भगवती की उत्पत्ति का भेद हमें समझाओ।



मुनि मेधा बोले सुनो ध्यान से।
मग्न निन्द्रा में विष्णु भगवान् थे।

थे आराम से शेष शैख्या पे वो।

असुर मधु-कैटभ वहां प्रगटे दो।



श्रवन मैल से प्रभु की लेकर जन्म।

लगे ब्रह्मा जी को वो करने खत्म।

उन्हे देख ब्रह्मा जी घबरा गये।

लखी निंद्रा प्रभु की तो चकरा गये।

तभी मग्न मन ब्रह्मा स्तुति करी।

कि इस योग निंद्रा को त्यागो हरी।

कहा शक्ति निंद्रा तू बन भगवती।

तू ख्वाहा तू अम्बे तू सुख सम्पति।

तू सावित्री सन्ध्या विश्व आधार तू।

है उत्पत्ति पालन व संहार तू।

तेरी रचना से ही यह संसार है।

किसी ने न पाया तेरा पार है।

ब्रह्मन द्वारा
प्राप्त
अनुकूल

गदा शंख चक्र पदम थ ले।

तू भक्तों का अपने सदा साथ दे।

महामाया तब चरण ध्याऊं, तुमरी कृपा अभय पद पाऊं।

ब्रह्मा विष्णु शिव उपजाए, धारण विविध शरीर कर आये।

तुमरी स्तुति की न जाए, कोइ न पार तुम्हारा पाए।

मधु कैटभ मोहे मारन आए, तुम बिन शक्ति कौन बचाए।

प्रभु के नेत्र से हट जाओ, शेष शैख्या से इन्हे जगाओ।

असुरों पर मोह ममता डालो, शर्णगत को देवी बचा लो।

सुन स्तुति प्रगटी महामाया, प्रभु आंखों से निकली छाया।

तामसी देवी नाम धराया, ब्रह्मा खातिर प्रभु जगाया।

दोहा :- योग निद्रा के हटते ही प्रभु उघाड़े नैन।
मधु कैटभ को देखकर बोले क्रोधित बैन।

ब्रह्मा मेरा अंश है मार सके न कोय।

मुझ से बल अजमाने को लड़ देखो तुम दोय।

प्रभु गदा लेकर उठे करने दैत्य संहार।

प्राक्रमी योद्धा लड़े वर्ष वो पांच जार।

तभी देवी महामाया ने दैत्यों के मन भरमाए।

बलवानों के हृदय में दिया अभिमान जगाए।

अभिमानी कहने लगे सुन विष्णु धर ध्यान।

युद्ध से हम प्रसन्न हैं मांगो कुछ वरदान।

प्रभु थे कोतक कर रहे बोले इतना हों।

मेरे हाथों से मरो वचन मुझे यह दो।



वचन बध्य वह राक्षस जल को देख अपार।

काल से बचने के लिए कहते शब्द उच्चार।

जल ही जल चहूं और है ब्रह्मा कमल बिराज।

मारना चाहते हो हमें तो सुनिए महाराज।

वध कीजो उस जगह पे जल न जहां दिखाये।

प्रभु ने इतना सुनते ही जांघ पे लिया लिटाये।

चक्र सुदर्शन से दिए दोनों के सिर काट।

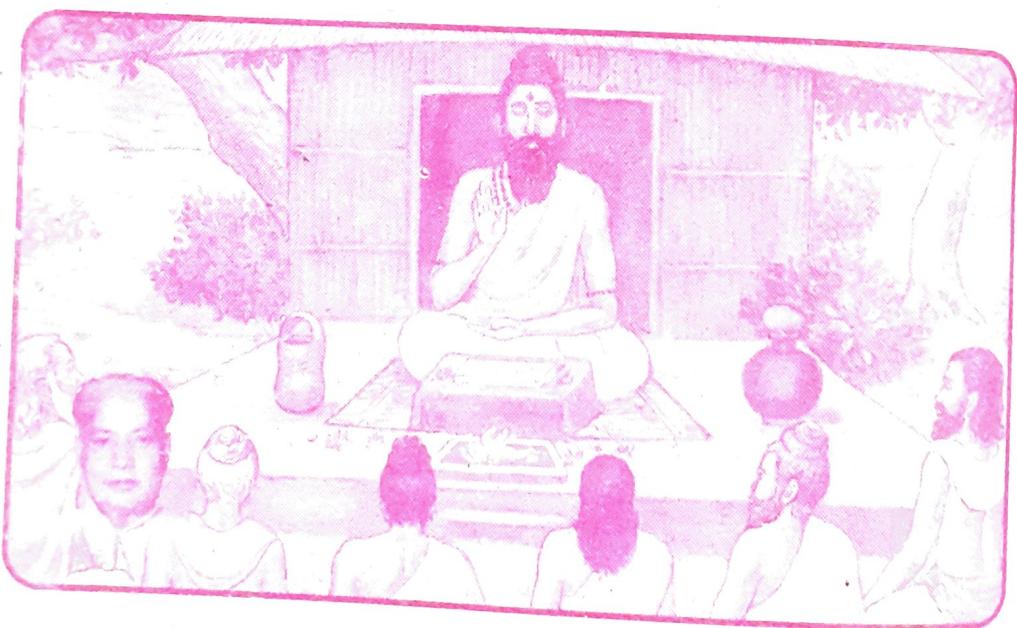
खुले नैन रहे दोनों के देखत प्रभु की बाट।

ब्रह्मा जी की स्तुति सुन प्रगटी महामाया।
पाठ पढ़े जो प्रेम से उसकी करे सहाय।

शक्ति के प्रभाव का पहला यह अध्याय।
'चमन' पाठ कारण लिखा सहजे शब्द बनाय।
श्रद्धा भवित से करो शक्ति का गुणगान।
ऋद्धि सिद्धि नव निधि दे करे दाती कल्याण।

दूसरा अध्याय

नेष्टन लेस्ट
प्राप्ति द्वारा
कृति



दुर्गा पाठ का दूसरा शुरू करुं अध्याय।
जिसके सुनने पढ़ने से सब संकट मिट जाय।

मेधा ऋषि बोले तभी, सुन राजन धर ध्यान।
भगवती देवी की कथा करे सब का कल्याण।

देव असुर भयो युद्ध अपारा, महिषासुर देतन सरदारा।
 योद्धा बली इन्द्र से भिड़यो, लड़यो वर्ष शतरणते न फिरयों।
 देव सेना तब भाई भाई, महिषासुर इन्द्रासन पाई।
 देव ब्रह्मा सब करें पुकारा, असुर राज लियो छीन हमारा।
 ब्रह्मा देवन संग पधारे, आए विष्णु शंकर द्वारे।
 कही कथा भर नैनन नीरा, प्रभु देत असुर बहु पीरा।
 सुन शंकर विष्णु अकुलाए, भवें तनी मन क्रोध बढ़ाए।
 नैन भये त्रयदेव के लाला, मुखन ते निकलयो तेज विशाला।

दोहा :- तब त्रयदेव के अंगो से निकला त्तेज अपार।

अष्टवृत्तस्तु
मात्रद्वादश
कल्पना

जिनकी ज्वाला से हुआ उज्जवल सब संसार।

सभी तेज इक जा मिल जाई, अतुल तेज बल परयो लखाई।
 ताही तेज सो प्रगटी नारी, देख देव सब भयो सुखारी।
 शिव के तेज ने मुख उपजायो, धर्म तेज ने केश बनायों।
 विष्णु तेज से बनी भुजाएं, कुच में चन्दा तेज समाए।
 नासिका तेज कुबेर बनाई, अग्नि तेज त्रयनेत्र समाई।
 ब्रह्म तेज प्रकाश फैलाए, रवि तेज ने हाथ बनाएं
 तेज प्रजापति दांत उपजाए, श्रवण तेज वायु से पाए।
 सब देवन जब तेज मिलाया, शिवा ने दुर्गा नाम धराया।

दोहा :- अट्टहास कर गर्जी जब दुर्गा आध भवार्नी
 सब देवन ने शक्ति यह माता करके मानी।

शम्भु ने त्रिशूल, चक्र विष्णु ने दीना। 
 अग्नि से शक्ति और शंख वर्ण से लीना।

व्रमण की

धनुष बाण, तरकश, वायु ने भेंट चढ़ाया।
सागर ने रत्नों का मां को हार पहनाया।

सूर्य ने सब रोम किए रोशन माता के।
बज्र दिया इन्द्र ने हाथ में जगदाता के।
ऐरावत ने गले की घण्टी ही दे डारी।
सिंह हिमालय ने दीना करने को सवारी।

काल ने अपना खड़ग दिया फिर सीस निवाई।
ब्रह्मा जी ने दिया कमण्डल भेंट चढ़ाई।
विश्वकर्मा ने अद्भुत इक फरसा दे दीना।
शेषनाग ने छत्र माता की भेंटा कीना।

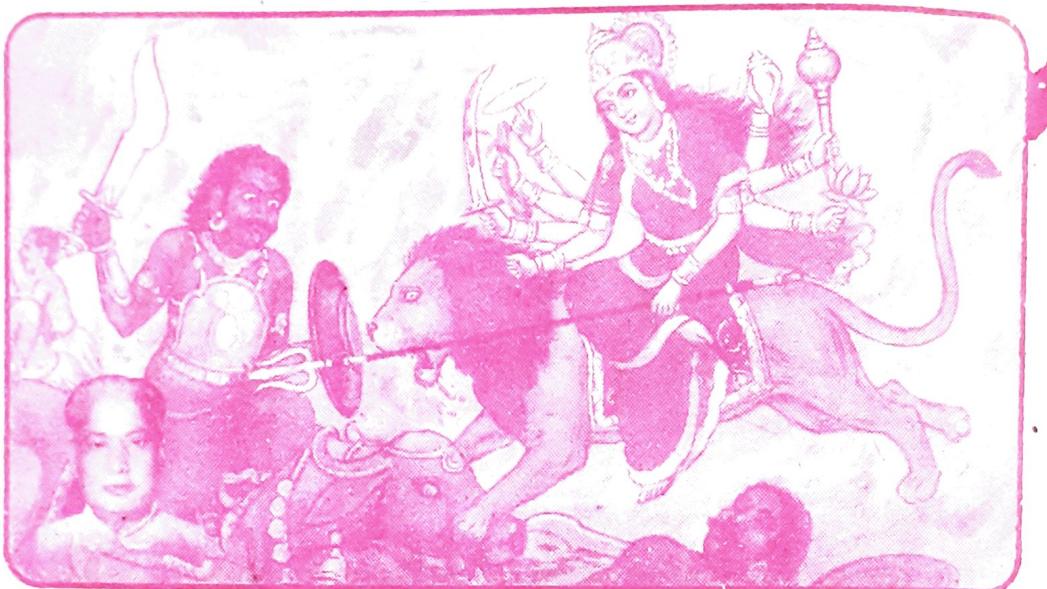
वस्त्र आभूषण नाना भाँति देवन पहनाए।
रत्न जड़ित मैय्या के सिर पर मुकुट सुहाए।
दोहा:- आदि भवानी ने सुनी देवन विनय पुकार।
असुरों के संघार को हुई सिंह सवार।
रण चण्डी ज्वाला बनी हाथ लिए हथियार।
सब देवों ने मिल तभी कीनी जै जै कार।

चली सिंह चढ़ दुर्गा भवानी, देव सेन को साथ लिये।
सब हथियार सजाए रण के, अति भयानक रूप किये।
महिपासुर राक्षस ने जब यह समाचार उनका पाया।
लकर असुरों की सेना जल्दी रण भूमि में आया।
तोनों दल जब हुए सामने रण भूमि में लड़ने लगे।
क्रौंचित हो रण चण्डी चली लाशों पर लाशें पड़ने लगे।

भगवती का यह रूप देख असुरों के दिल थे कांप रहे।
लड़ने से घबराते थे, कुछ भाग गये कुछ हांफ रहें।
असुर के साथ करोड़ों हाथी घोड़े सेना में आये।
देख के दल महिषासुर का व्याकुल हो देवता घबराए।
रण चण्डी ने दशों दिशाओं में वोह हाथ फैलाए थे।
युद्ध भूमि में लाखों दैत्यों के सिर काट गिरायें थे।
देवी सेना भाग उठी रह गई अकेली दुर्गा ही।
महिषासुर सेना के सहित ललकारता आगे बढ़ा तभी।
उस दुर्गा अष्टभुजी मां ने रण भूमि में लम्बे सांस लिए।
श्वास श्वास में अम्बा जी ने लाखों ही गण प्रगट किए।
बलशाली गण बढ़े वो आगे सजे सभी हथियारों से।
गुंज उठा आकाश तभी माता के जै जै कारों से।
पृथ्वी पर असुरों के लहू की लाल नदी वह बहती थी।
बच नहीं सकता दैत्य कोई ललकार के देवी कहती थी।
लकड़ी के ढेरों को अग्नि जैसे भर्सम बनाती है।
वैसे ही शक्ति की शक्ति दैत्य मिटाती जाती है।
सिंह चढ़ी दुर्गा ने पल में दैत्यों का संहार किया।
पुष्प देवों ने बरसाए माता का जै जै कार किया।
‘चमन’ जो श्रद्धा प्रेम से दुर्गा पाठ को पढ़ता जाएगा।
दुःखो से वह रहेगा बचता मनवांछित फल पायेगा।

दोहा: हुआ समाप्त दूसरा दुर्गा पाठ अध्याय।
 ‘चमन’ भवानी की दया, सुख सम्पत्ति घर आए।

तीसरा अध्याय



दोहा :- चक्षुर ने निज सेना का सुना जभी संहार।
क्रोधित होकर लड़ने को आप हुआ तैयार।
ऋषि मेधा ने राजा से फिर कहा। अजग्नि अरु अरुण
सुनों तृतीय अध्याय की अब कथा।

महा योद्धा चक्षुर था अभिमान में।
गर्जता हुआ आया मैदान में।
वह सेनापति असुरों का वीर था।
चलाता महा शक्ति पर तीर था।

मगर दुर्गा ने तीर काटे सभी।
कई तीर देवी चलाए तभी।
जभी तीर तीरों से टकराते थे।
तो दिल शूरवीरों के घबराते थे।

तभी शक्ति ने अपनी शक्ति चला।
वह रथ असुर का टुकड़े टुकड़े किया।

असुर देख बल मां का घबरा गया।
खड़ग हाथ ले लड़ने को आ गया।



नमस्तद्यत्पूर्व
ज्ञानार्थकृत
विजयन् किया वार गर्दन पे जब शेर की।
बड़े वेग से खड़ग मारी तभी।

भुजा शक्ति पर मारा तलवार को।
वह तलवार टुकड़े गई लाख हो।

असुर ने चलाई जो त्रिशुल भी।
लगी माता के तन को वह फूल सी।

लगा कांपने देख देवी का बल।
मगर क्रोध से चैन पाया न पल।

असुर हाथी पर माता थी शेर पर।
लाई मौत थी दैत्य को धेर कर।

उछल सिंह हाथी पे ही जा चढ़ा।
वह माता का सिंह दैत्य से जा लड़ा।

जभी लड़ते लड़ते गिरे पृथ्वी पर।
बढ़ी भद्रकाली तभी क्रोध कर।

असुर दल का सेना पति मार कर।
चली काली के रूप को धार कर।

गर्जती खड़ग को चलाती हुई।
वह दुष्टों के दल को मिटाती हुई।

पवन रूप हलचल मचाती हुई।
असुर दल जर्मी पर सुलाती हुई।

लहू की वह नदियाँ बहाती हुई।
नए रूप अपने दिखाती हुई।



दोहा :- महांकाली ने असुरों की जब सेना दी मार।
महिषासुर आया तभी रूप भैंसे का धार।

सवैया : गर्ज उसकी सुनकर लगे भागने गण।
कई भागतों को असुर ने संहारा।

खुरों से दबाकर कई पीस डालें।
लपेट अपनी पूँछ में कईयों को मारा।

जमी आसमां को गर्ज से हिलाया।

पहाड़ो को रींगो से उसने उखाड़ा।
श्वासों से बेहोश लाखों ही कीने।

विकल अपनी सेना को दुर्गा ने देखा।
लगे करने देवी के गण हा हा कारा।

लिए शंख चक्र गदा पदम हाथों।
चढ़ी सिंह पर मार किलकार आई।

किया रूप शक्ति ने चण्डी का धारण।
वह त्रिशूल फरसा ले तलवार आई।

लिया बांध भैंसे को निज पाश में झट।
वह दैत्यों का करने थी संहार आई।

बना शेर सन्मुख लगा गरजने वौं।
तो चण्डी ने हाथों में फरसा उठाया।

लगी काटने दैत्य के सिर को दुर्गा।

तो तज सिंह का रूप नर बन के आया।
जो नर रूप की माँ ने गर्दन उड़ाई।

तो गज रूप धारण किया बिल बिलाया।
लगा खैंचने शेर को सूंड से जब।

तो दुर्गा ने सूंड को काट गिराया।
कपट माया कर दैत्य ने रूप बदला।

लगा भैंसा बन के उपद्रव मचानें।
तभी क्रोधित होकर जगत मात चण्डी।

लगी नेत्रों से अग्नि वरसानें।
धमकते हुए मुख से प्रगटी ज्वाला।

लगी अब असुर को ठिकाने लगानें।
उछल भैंसे की पीठ पर जा चढ़ी वह।

लगी पांवो से उसकी देह को दबाने।
दिया काट सर भैंसे का खड़ग से जब।

तो आधा ही तन असुर का बाहर आया।
तो त्रिशूल जगदम्बे ने हाथ लेकर।

महा दुष्ट का सीस धड़ से उड़ाया।
चली क्रोध से मैथ्या ललकारती तब।

किया पल में दैत्यों का सारा सफाया।
'चमन' पुष्प देवों ने मिल कर गिराए।

अप्सराओं व गन्धर्वों ने राग गाया।



तृतीय अध्याय में है महिषासुर संहार।
 'चमन' पढ़े जो प्रेम से मिटते कष्ट अपार।



चौथा अध्याय

जगन्नाथ
महाद्वारा
कृत



आदिशक्ति ने जब किया महिषासुर का नास।
 सभी देवता आ गये तब माता के पास।
 मुख प्रसन्न से माता के चरणों में सीस झुकाये।
 करने लगे वह स्तुति मीठे बैन सुनायें।
 हम तेरे ही गुण गाते हैं, चरणों में सीस झुकाते हैं।
 तेरे जै कार मनाते हैं, जै जै अम्बे जै जगदम्बे।
 जै दुर्गा आदि भवानी की, जै जै शक्ति महारानी की।
 जै अभयदान वरदानी की, जै अष्टभुजी कल्याणी की।



तुम महा तेज शक्ति शाली।

तुम ही हो अद्भुत बलवाली।

तू रण चण्डी तू महाकाली।

तुम दासों की हो रखवाली-हम तेरे ही गुण गाते हैं।

तुम दुर्गा बन कर तारती हों।

चण्डी बन दुष्ट संहारती हों।

काली रण में ललकारती हों।

नमस्करण
अमरद्वारा
प्रकाशन

शक्ति तुम बिगड़ी संवारती हो-हम तेरे ही गुण गाते हैं।

हर दिल में वास तुम्हारा है।

तेरा ही जगत पसारा है।

तुमने ही अपनी शक्ति से।

बलवान दैत्य को मारा है-हम तेरे ही गुण गाते हैं।

ब्रह्मा विष्णु महादेव बड़े।

तेरे दर पर कर जोड़ खड़े।

वर पाने को चरणों में पड़े।

शक्ति पा जा दैत्यों से लड़े-हम तेरे ही गुण गाते हैं।

हर विद्या का है ज्ञान तुझें।

अपनी शक्ति पर मान तुझें।

हर इक की है पहचान तुझें।

हर दास का माता ध्यान तुझे-हम तेरे ही गुण गाते हैं।

ब्रह्मा जब दर पर आते हैं।

वेदों का पाठ सुनाते हैं।

विष्णु जी चंवर झुलाते है।

शिव शम्भु नाद बजाते है-हम तेरे ही गुण गाते हैं।

तू भद्रकाली है कहलाई।

तू पार्वती बन कर आई।

दुनियां के पालन करने को।

तू आदि शक्ति है महामाई-हम तेरे ही गुण गाते है।

भूखों को अन्न खिलाये तू।

भक्तों के कष्ट मिटाये तू।

तू दयावान दाती मेरी।



हर मन की आस पुजाये तू-हम तेरे ही गुण गाते है।

निर्धन के तू भण्डार भरें।

तू पतितों का उद्धार करें।

तू अपनी भक्ति दे करके।

भव सुगर से भी पार करे-हम तेरे ही गुण गाते है।

है त्रिलोकी में वास तेरा।

हर जीव है मैथ्या दास तेरा।

गुणगाता जर्मी आकाश तेरा।

हमको भी है विश्वास तेरा-हम तेरे ही गुण गाते है।

दुनियां के कष्ट मिटा माता।

हर इक की आस पुजा माता।

हम और नहीं कुछ चाहते हैं।

बरा अपना दास बना माता-हम तेरे ही गुण गाते है।



वैष्णव
लिखा द्वारा
प्रकाशित

तू दया करे तो मान भी हो।

दुनिया की कुछ पहचान भी हो।

भक्ति से पैदा ज्ञान भी हो।

तू कृपा करे कल्याण भी हो-हम तेरे ही गुण गाते हैं।

देवों ने प्रेम पुकार करी।

मां अम्बे झट प्रसन्न हुई।

दर्शन देकर जग की जननी।

तब मधुर वाणी से कहने लगी।

मांगो वरदान जो मन भाए।

देवों ने कहा तब हर्षाये।

जब भी हम प्रेम से याद करें।

मां देना दर्शन दिखलाये-हम तेरे ही गुण गाते हैं।

तब भद्रकाली यह बोल उठी।

तुम करोगे याद मुझे जब ही।

मैं संकट दूर करूं तब ही।

इतना कह अर्त्तध्यान हुई।

तब 'चमन' खुशी हो सब ने कहा।

जय जगतारणी भवाणी मां-हम तेरे ही गुण गाते हैं।

वेदों ने पार न पाया है।

कैसी शक्ति महामाया है।

लिखते लिखते यह दुर्गा पाठ।

मेरा भी मन हर्षाया है।



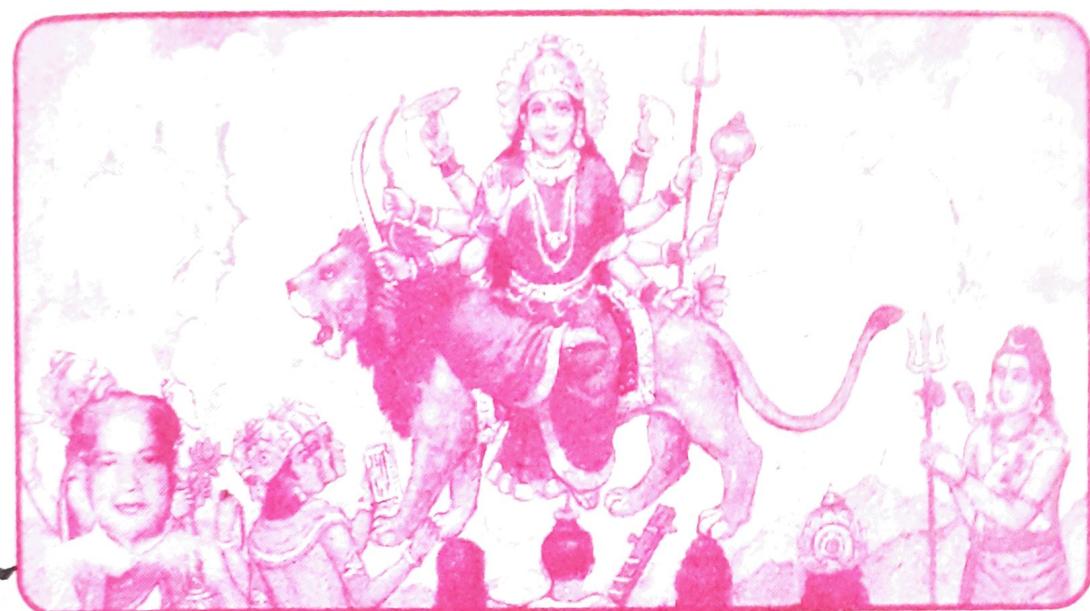
नादान 'चमन' पे दया करो।
 शारदा माता सिर हाथ धरो।
 जो पाठ प्रेम से पढ़ जाये।
 मुंह मांगा माता वर पाये।
 सुख सम्पति उसके घर आये।
 हर समय तुम्हारे गुण गाये।
 उसके दुःख दर्द मिटा देना।

दर्शन अपना दिखला देना-हम तेरे ही गुण गाते हैं।

जैकार र्तोत्र यह पढ़े जो मन चित लाये।
 भगवती माता उसके सब देगी कष्ट मिटाए।
 माता के मन्दिर में जा सात बार पढ़े जोए।
 शक्ति के वरदान से सिद्ध कामना होए।
 'चमन' निरन्तर जो पढ़े पाठ एक ही बार।
 सदा भवानी सुख दे भरती रहे भण्डार।
 इस र्तोत्र को प्रेम से जो भी पढ़े सुनाए।
 हर संकट में भगवती होवे आन सहाए।
 मान इज्जत सुख सम्पति मिले 'चमन' भरपूर।
 दुर्गा पाठी से कभी रहे न मैथ्या दूर।
 'चमन' की रक्षा सदा ही - रत महारानी।
 जगदम्बे महाकालिका चौ. आदि भवानी।

सूचना : 'चमन' की श्री दुर्गा रत्नि का पाठ सब मनोकामना पूर्ण करता है। इसके साथ ही 'वरदाती माँ' और संकट मोचन पढ़े। 'चमन'

पांचवा अध्याय



ऋषि राज कहने लगे, सुन राजन मन लाय।
दुर्गा पाठ का कहता हूं, पांचवा मैं अध्याय।

ब्रह्मन हराय
भारद्वाज
कल्पन

एक समय शुभ्म निशुभ्म दो हुए दैत्य बलवान।
जिनके भय से कांपता था यह सारा जहान।
इन्द्र आदि को जीत कर लिया सिंहासन छीन।
खोकर ताज और तख्त को हुए देवता दीन।

देव लोक को छोड़ कर भागे जान बचायें।
जंगल जंगल फिर रहे संकट से घबराये।
तभी याद आया उन्हे देवी का वरदान।
याद करोगे जब मुझे करुंगी मैं कल्याण।

तभी देवताओं ने स्तुति करी।
खड़े हो गये हाथ जोड़े सभी।

लगे कहने ऐ मैथ्या उपकार कर।
तू आ जल्दी दैत्यों का संहार कर।

प्रकृति महा देवी भद्रा है तू।

तू ही गौरी धात्री व रुद्रा है तू।

तू है चन्द्र रूपा तू सुखदायनी।

तू लक्ष्मी सिद्धि है सिंहवाहिनी।

 है बेअन्त रूप और कई नाम है।

तेरा नाम जपते सुबह शाम है।

तू भक्तों की कीर्ति तू सत्कार है।

तू विष्णु की माया तू संसार है।

तू ही अपने दासों की रखवार है।

तुझे मां करोड़ो नमस्कार है।

नमस्कार है मां नमस्कार है।

तू हर प्राणी में चेतन आधार है।

तू ही बुद्धि मन तू ही अहंकार है।

तू ही निंद्रा बन देती दीदार है।

तुझे मां करोड़ो नमस्कार है।

नमस्कार है मां नमस्कार है।

तू ही छाया बनके है छाई हुई।

क्षुधा रूप सब में समाई हुई।

तेरी शवित का सब में विरत्तार है।

तुझे मां करोड़ो नमस्कार है।

नमस्कार है मां नमस्कार है।

है तृष्णा तू ही क्षमा रूप है।
 यह ज्योति तुम्हारा ही सवरूप है।
 तेरी लज्जा से जग शर्मसार है।
 तुझे मां करोड़ो नमस्कार है।
 नमस्कार है मां नमस्कार है।



तू ही शान्ति बनके धीरज धरावे।
 तू ही श्रद्धा बनके यह भक्ति बढ़ावे।
 तू ही कान्ति तू ही चमत्कार है।
 तुझे मां करोड़ो नमस्कार है। नेपाल लखन
भारद्वाज
बैंगल
 नमस्कार है मां नमस्कार है।

तू ही लक्ष्मी बन के भण्डार भरती।
 तू ही वृति बनके कल्याण करती।
 तेरा स्मृति रूप अवतार है।
 तुझे मां करोड़ो नमस्कार है।
 नमस्कार है मां नमस्कार है।

तू ही तुष्टी बनी तन में विख्यात है।
 तू हर प्राणी की तात और मात है।
 दया बन समाई तू दातार है।

तुझे मां करोड़ो नमस्कार है।
 नमस्कार है मां नमस्कार है।

तू ही भ्रान्ति भ्रम उपजा रही।
 अधिष्ठात्री तू ही कहला रही।
 तू चेतन निराकार साकार है।

तुझे मां करोड़ो नमस्कार है।
नमस्कार है मां नमस्कार है।



तू ही शक्ति है ज्वाला प्रचण्ड है।

तुझे पूजता सारा ब्रह्मण्ड है।

तू ही ऋद्धि सिद्धि का भण्डार है।

तुझे मां करोड़ो नमस्कार है।

नमस्कार
आरद्धार्थ
अन्तर्गत

नमस्कार है मां नमस्कार है।

मुझे ऐसा भक्ति का वरदान दो।

'चमन' का भी उद्धार कल्याण हो।

तू दुखिया अनाथों की गमखार है।

तुझे मां करोड़ो नमस्कार है।

नमस्कार है मां नमस्कार है।

नमस्कार स्तोत्र को जो पढ़े।

भवानी सभी कष्ट उसके हरे।

'चमन' हर जगह वह मददगार है।

तुझे मां करोड़ो नमस्कार है।

नमस्कार है मां नमस्कार है।

लेहा : राजा से बोले ऋषि सुन देवन की पुकार।

जगदम्बे आई वहां रूप पार्वती धार।

गंगा-जल में जब किया भगवती ने स्नान।

देवों से कहने लगी किसका करते हो ध्यान।

इतना कहते ही शिवा हुई प्रकट तत्काल।
पार्वती के अंश से धारा रूप विशाल।

 शिवा ने कहा मुझ को हैं ध्या रहे।
यह सब स्तुति मेरी ही गा रहे।

हैं शुभ्म और निशुभ्म के डराये हुए।
शरण में हमारी हैं आए हुए।

शिवा अंश से बन गई अम्बिका।

जो बाकी रही वह बनी कालिका।

धरे शैल पुत्री ने यह दोनों रूप।

बनी एक सुन्दर बनी एक कुरुप।

नमस्तेतत्पूर्ण
प्रसद्याज्ञ
अनन्त महांकाली जग में विचरने लगी।

और अम्बे हिमालय पे रहने लगी।

तभी चण्ड और मुण्ड आये वहां।

विचरती पहाड़ों में अम्बे जहां।

अति रूप सुन्दर न देखा गया।

निरख रूप मोह दिल में पैदा हुआ।

कहा जा के फिर शुभ्म महाराज जी।

कि देखी है इक सुन्दरी आज ही।

चढ़ी सिंह पर सैर करती हुई।

वह हर मन में ममता को भरती हुई।

चलो आंखो से देख लो भाल लो।

रत्न है त्रिलोकी का संभाल लो।



सभी सुख चाहे घर में मौजूद है।
मगर सुन्दरी बिन वो बेसूद है।

वह बलवान राजा है किस काम का।
न पाया जो साथी यह आराम है।
करो उससे शादी तो जानेंगे हम।
महलों में लाओ तो मानेंगे हम।

यह सुनकर वचन शुभ्म का दिल बढ़ा।
महा असुर सुग्रीव से यूं कहा।
जाओ देवी से जाके जल्दी कहो। ब्रह्मन्तप्त
शुरद्वारा
अनन्त
कि पत्नी बनो महलों में आ रहो।

तभी दूत प्रणाम करके चला।
हिमालय पे जा भगवती से कहा।
मुझे भेजा है असुर महाराज ने।
अति योद्धा दुनियां के सरताज ने।

वह कहता है दुनियां का मालिक हूं मैं।
इस त्रिलोकी का प्रतिपालक हूं मैं।
रत्न हैं सभी मेरे अधिकार में।
मैं ही शक्तिशाली हूं संसार में।

सभी देवता सर झुकायें मुझे।
सभी विपता अपनी सुनायें मुझे।
अति सुन्दर तुम स्त्री रत्न हो।
हो क्यों नष्ट करती सुन्दरताई को।

बनो मेरी रानी तो सुख पाओगी।

न भटकोगी बन मैं न दुःख पाओगी।

जवानी मैं जीना वो किस काम का।

मिला न विषय सुख जो आराम का।

जो पत्नी बनोगी तो अपनाऊंगा।

मैं जान अपनी कुर्बान कर जाऊंगा।

ब्रह्मलक्ष्मी
असरद्वात्

भूत

दोहा:- दूत की बातों पर दिया देवी ने न ध्यान।

कहा डांट कर सुन अरे मूर्ख खोल के कान।

सुना मैंने वह दैत्य बलवान है।

वह दुनियां मैं शहजोर धनवान है।

सभी देवता हैं उस से हारे हुए।

छुपे फिरते हैं डर के मारे हुए।

यह माना कि रत्नों का मालिक है वो।

सुना यह भी सृष्टि का पालिक है वो।

मगर मैंने भी एक प्रण ठाना है।

तभी न असुर का हुक्म माना है।

जिसे जग में बलवान पाऊंगी मैं।

उसे कन्त अपना बनाऊंगी मैं।

जो है शुभ्म ताकत के अभिमान में।

तो भेजो उसे आये मैदान में।

दोहा:- कहा दूत ने सुन्दरी न कर यूँ अभिमान।

शुभ्म निशुभ्म है दोनों ही, योद्धा अति बलवान।



उन से लड़कर आज तक जीत सका न कोय।
 तू झूटे अभिमान में काहे जीवन खोय।
 अम्बा बोली दूत से बन्द करो उपदेश।
 जाओ शुभ्म निशुभ को दो मेरा सन्देश।
 'चमन' कहे दैत्य जो, वह फिर कहना आए।
 युद्ध की प्रतिज्ञा मेरी, देना सब समझाए।

छठा अध्याय

नेपाल लख्मी
 भगवान् श्री राम
 राजन



नव दुर्गा के पाठ का छठा है यह अध्याय।
 जिसके पढ़ने सुनने से जीव मुक्त हो जाय।

ऋषिराज कहने लगे सुन राजन मन लाय।
 दूत ने आकर शुभ्म को दिया हाल बतलाय।

सुनकर सब वृतांत को हुआ क्रोध से लाल।

धूम्र-लोचन सेनापति बुला लिया तत्काल।

 आज्ञा दी उस असुर को सेना लेकर जाओ।

केशों से तुम पकड़ कर, उस देवी को लाओ।

पाकर आज्ञा शुभ्म की चला दैत्य बलवान।

सेना साठ हजार ले जल्दी पहुंचा आन।

देखा हिमालय शिखर पर बैठी जगत-आधार।

क्रोध में तब सेनापति बोला यूं ललकार।

चलो खुशी से आप ही मम स्वामी के पास।

नहीं तो गौरव का तेरे कर दूंगा मैं नाश।

सुने भवानी ने वचन बोली तज अभिमान।

देख्यूं तो सेनापति कितना है बलवान।

मैं अबला तव हाथ से कैसे जान बचाऊं।

बिना युद्ध पर किस तरह साथ तुम्हारे जाऊं।

लड़ने को आगे बढ़ा सुन कर वचन दलेर।

दुर्गा ने हुंकार से किया भर्सम का ढेर।

सेना तब आगे बढ़ी चले तीर पर तीर।

कट कट कर गिरने लगे सिर से जुदा शरीर।

मां ने तीखे बाणों की वो वर्षा बरसाई।

दैत्यों की सेना सभी गिरी भूमि पे आई।

सिंह ने भी कर गर्जना लाखों दिए संहार।

सीने दैत्यों के दिये निज पंजों से फाड़।

लाशों के थे लग रहे रण भूमि में ढेर।
चहूं तर्फा था फिर रहा जगदम्बा का शेर।

जगन्नाथ
प्रसादात्
कृष्ण
धूम्रलोचन और सेना के मरने का सुन हाल।
दैत्य राज की क्रोध से हो गई आँखे लाल।

चण्ड मुण्ड तब दैत्यों से बोला यूं ललकार।
सेना लेकर साथ तुम जाओ हो होशियार।

मारो जाकर सिंह को देवी लाओ साथ।
जीती गर न आए तो करना उसका घात।
देखूगां उस अम्बे को कितनी बलवाली।
जिसने मेरी सेना यह मार सभी डाली।
आज्ञा पाकर शुभ्म की चले दैत्य बलबीर।
'चमन' इन्हे ले जा रही मरने को तकदीर।

सातवां अध्याय



चण्ड मुण्ड चतुरंगणी सेना को ले साथ।
अस्त्र शस्त्र ले देवी से चले करने दो हाथ।

गये हिमालय पर जभी दर्शन सब ने पाए।
सिंह चढ़ी माँ अम्बिका खड़ी वहाँ मुस्कराए।

 लिये तीर तलवार दैत्य माता पे धाए।

दुष्टों ने शस्त्र देवी पे कई बरसाए।

क्रोध से अम्बा की आँखो में भरी जो लाली।

निकली दुर्गा के मुख से तब ही महाकाली।

खाल लपेटी चीते की गल मुँडन माला।

लिए हाथ में खप्पर और इक खड़ग विशाला।

लपलप करती लाल जुबां मुँह से थी निकाली।

अति भयानक रूप से फिरती थी महांकाली।

अट्टहास कर गर्जी तब दैत्यों में धाई।

मार धाड़ करके कीनी असुरों की सफाई।

पकड़ पकड़ बलवान दैत्य सब मुँह में डाले।

पांवों नीचे पीस दिए लाखों मतवाले।

रुण्डो की माला में काली सीस परोये।

ज्ञानलृति
प्रसादात्म
स्तुति

कइयों ने तो प्राण ही डर के मारे खोये।

चण्ड मुण्ड यह नाश देख आगे बढ़ आये।

महांकाली ने तब अपने कई रंग दिखाये।

खड़ग से ही कई असुरों के टुकड़े कर दीने।

खप्पर भर भर लहू लगी दैत्यों का पीने।

लोक

चण्ड मुण्ड का खड़ग से लीना सीस उतार।

आ गई पास भवानी के मार एक किलकार।

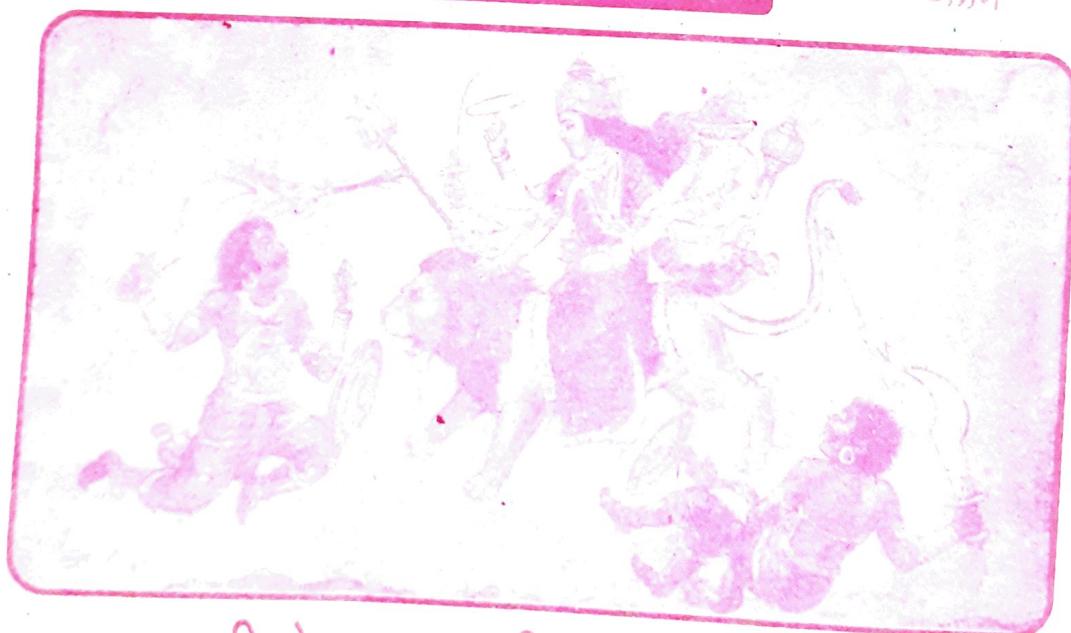
कहा काली ने दुर्गा से किये दैत्य संहार।
शुभ निशुभ को अपने ही हाथों देना मार।



तब अम्बे कहने लगी सुन काली मम बात।
आज से चामुण्डा तेरा नाम हुआ विख्यात।
चण्ड मुण्ड को मार कर आई हो तुम आप।
आज से घर घर होवेगा नाम तेरे का जाप।
जो श्रद्धा विश्वास से सप्तम पढ़े अध्याय।
महांकाली की कृपा से संकट सब मिट जाय।
नव दुर्गा का पाठ यह 'चमन' करे कल्याण।
पढ़ने वाला पाएगा मुंह मांगा वरदान।

आठवां अध्याय

ब्रह्मलक्ष्म
श्रद्धाग्र
चमन



दोहा: काली ने जब कर दिया चण्ड मुण्ड का नाश।
सुनकर सेना का मरण हुआ निशुभ उदास।



तभी क्रोध करके बढ़ा आप आगे।
इवट्टे किए दैत्य जो रण से भागे।

कुलों की कुलें असुरों की ली बुलाई।
दिया हुकम अपना उन्हें तब सुनाई।

चलो युद्ध भूमि में सेना सजा के।
फिरो देवियों का निशा तुम मिटा के।

ब्रह्मनन्दन
भरद्वाज
जनन अधायुध और शुभ्म थे दैत्य योद्धा।
भरा उनके दिल में भयंकर क्रोधा।

असुर रक्तबीज को ले साथ धाए।
चले काल के मुंह में सेना सजाए।

मुनि बोले राजा वह शुभ्म अभिमानी।
चला आप भी हाथ मं धनुष तानी।

जो देवी ने देखा नई सेना आई।
धनुष की तभी डोरी मां ने चढ़ाई।

वह टंकार सुन गूंजा आकाश सारा।
महांकाली ने साथ किलकार मारा।

किया सिंह ने भी शब्द फिर भयंकर।
आए देवता ब्रह्मा विष्णु व शंकर।

हर इक अंश से रूप देवी ने धारा।
वह निज नाम से नाम उनका पुकारा।

वनी ब्रह्मा के अंश देवी ब्रह्माणी।
चढ़ी हंस माला कमण्डल निशानी।

चढ़ी बैल त्रिशूल हाथों में लाई
 शिवा शक्ति शंकर की जग में कहलाई।
 वह अम्बा बनी सवामी कार्तिक की अंशी।
 चढ़ी गरुड़ आई जो थी विष्णु वंशी।
 वाराह अंश से रूप वाराही आई।
 वह नरसिंह ने नरसिंही कहलाई।
 ऐरावत जगन्नाथ भगवान् एरावत चढ़ी इन्द्र की शक्ति आई।
 महादेव जी तब यह आज्ञा सुनाई
 सभी मिल के दैत्यों का संहार कर दो।
 सभी अपने अंशों का विस्तार कर दो।

दोहा:- इतना कहते ही हुआ भारी शब्द अपार।
 प्रगटी देवी चण्डिका रूप भयानक धार।
 घोर शब्द से गर्ज कर कहा शंकर से जाओ।
 बनो दूत, सन्देश यह दैत्यों को पहुंचाओ।
 जीवित रहना चाहते हैं तो जा बसें पाताल।
 इन्द्र को त्रिलोक का दें वह राज्य संभाल।
 नहीं तो आयें युद्ध में तज जीवन की आस।
 इनके रक्त से बुझेगी महाकाली की प्यास।
 शिव को दूत बनाने से शिवदूती हुआ नाम।
 इसी चण्डी महांमाया ने किया घोर संग्राम।
 दैत्यों ने शिव शम्भु की मानी एक न बात।
 चले युद्ध करने सभी लेकर सेना साथ।

आसुरी सेना ने तभी ली सब शक्तियां धेर। -
चले तीर तलवार तब हुई युद्ध की छेड़।



दैत्यों पर सब देवियां करने लगी प्रहार।
छिन्न भर में होने लगा असुर सेना संहार।
दशों दिशाओं में मचा भयानक हा हा कार।
नव दुर्गा का छा रहा था वहां तेज अपार।

सुन काली की गर्जना हुए व्याकुल चीर।
चण्डी ने त्रिशूल से दिए कलेजे चीर।
शिवदूती ने कर लिए भक्षण कई शरीर।
अम्बा की तलवार ने कीने दैत्य अधीर।

यह संग्राम देख गया दैत्य खीज।
तभी युद्ध करने बढ़ा रक्तबीज।
गदा जाते ही मारी बलशाली ने।
चलाए कई बाण तब काली ने।

लगे तीर सीने से वापस फिरे।
रक्तबीज के रक्त कतरे गिरे।
रुधिर दैत्य का जब जर्मी पर बहा।
हुए प्रगट फिर दैत्य भी लाखहा।

फिर उनके रक्त कतरे जितने गिरे।
उन्हीं से कई दैत्य पैदा हुए।
यह बढ़ती हुई सेना देखी जभी।
तो घबरा गये देवता भी सभी।

विकल हो गई जब सभी शक्तियां।
तो चण्डी ने महा कालिका से कहा।



करो अपनी जीभा का विस्तार तुम।
फैलाओ यह मुँह अपना इक बार तुम।
मेरे शरक्त्रों से लहू जो गिरे।

वह धरती के बदले जुबां पर पड़े।

लहू दैत्यों का सब पिए जाओ तुम।
ये लाशें भी भक्षण किये जाओ तुम।
न इसका जो गिरने लहू पाएगा।
तो मारा असुर निश्चय ही जाएगा।

लोक: इतना सुन महाकाली ने किया भयानक वेश।

गर्ज से घबराकर हुआ व्याकुल दैत्य नरेश।
रक्तबीज ने तब किया चण्डी पर प्रहार।
रोक लिया त्रिशूल से जगदम्बे ने वार।
तभी क्रोध में चण्डिका आगे बढ़ कर आई।
अपनी खड़ग से दैत्य की गर्दन काट गिराई।
शीशा कटा तो लहू गिरा चामुण्डा गई पी।
रक्तबीज के रक्त से सके न निश्चर जी।
महाकाली मुँह खोल के धाई, दैत्य के रुधिर से प्यास बुझाई।
धरती प लहू गिरने ना पाया, खप्पर भर पी गई महामाया।
भयोनाश तब रक्तबीज का, नाची तब प्रसन्न हो कालका।
असुर संना सब दीन संहारी, युद्ध में भयो कुलाहल भारी।

देवता गण तब अति हर्षाये, धरयो शीश शक्ति पद आये।
कर जोड़े सब विनय सुनायें, महामाया की स्तुति गायें।
चण्डिका तब दीनो वरदाना, सब देवन का कियो कल्याण।
खुशी से नृत्य किया शक्ति ने, वर यह 'चमन' दिया शक्ति ने।
जो यह पाठ पढ़े या सुनाये, मनवांछित फल मुझ से पाये।
उसके शत्रु नाश करुंगी, पूरी उसकी आस करुंगी।
मां सम पुत्र को मैं पालूंगी, सभी भण्डारे भर डालूंगी।

दोहा:- तीन काल है सत्य यह शक्ति का वरदान।

नव दुर्गा के पाठ से है सब का कल्याण।

भक्ति शक्ति मुक्ति का है यही भण्डार।

इसी के आसरे ऐ 'चमन' हो भवसागर पार।

नवरात्रों में जो पढ़े देवी के मन्दिर जाए।

कहें मारकंडे ऋषि मन वांछित फल पाए।

वरदाती वरदायनी सब की आस पुजाए।

प्रेम सहित महामाया की जो भी स्तुति गाए।

सिंह सवारी मैथ्या की मन मन्दिर जब आए।

किसी भी संकट में पड़ा भक्त नहीं घवराए।

किसी जगह भी शुद्ध हो पढ़े या पाठ सुनाए।

'चमन' भवानी की कृपा उस पर ही हो जाए।

नव दुर्गा के पाठ का आठवाँ यह अध्याय।

निस दिन पढ़े जो प्रेम से शत्रु नाश हो जाय।

नवम् अध्याय

ब्रह्मलङ्घ
भगवद्वाज
स्तुति



राजा बोला ऐ ऋषि महिमा सुनी अपार।
रक्तबीज को युद्ध में चण्डी दिया संहार।
कहो ऋषिवर अब मुझे शुभ्म निशुभ्म का हाल।
जगदम्बे के हाथों से आया कैसे काल।
ऋषिराज कहने लगे राजन सुन मन लाय।
दुर्गा पाठ का कहता हूं अब मैं नवम् अध्याय।
रक्तबीज को जब शक्ति ने रण में मारा।
चला युद्ध करने निशुभ्म ले कटक अपार।
चारों और से दैत्यों ने शक्ति को धेरा।
तभी चढ़ा महाकाली को भी क्रोध घनेरा।
महा पराक्रमी शुभ्म लिये सेना को आया।
गदा उठा कर महां चण्डी को मारन धाया।

देवी और दैत्यों के तीर लगे फिर चलने।

बड़े बड़े बलवान लगे मिट्टी में मिलने।



रण में लगी चमकने वो तीखी तलवारे।

चारों तरफ लगी होने भयंकर ललकारे
दैत्य लगा रण भूमि में माया दिखलाने।

एक से लगा अनेक वह अपने रूप बनाने।

श्री दुर्गा स्तुति

चण्डी काली अम्बा ने त्रिशूल चलाए।

क्षण भर में वह योद्धा सारे मार गिराए।
शुभ्म ने अपनी गदा घुमा देवी पर डाली।
काली ने तीखी त्रिशूल से काट वह डाली।

सिंह चढ़ी अम्बा ने कर प्रलय दिखलाई।

चण्डी के खण्डे ने हा हा कार मचाई।
भर भर खप्पर दैत्यों का लहू पी गई काली।
पृथ्वी और आकाश में छाई खून की लाली।

अष्टभुजी ने शुभ्म के सीने मारा भाला।

दैत्य को मूर्छित करके उसे पृथ्वी पर डाला।
शुभ्म गिरा तो चला निशुभ्म भरा मन क्रोधा।
अट्ठहास कर गरंजा वह बलशाली योद्धा।

लोहा:- अष्टभुजी ने दैत्य की मारा छाती तीर।

हुआ प्रगट फिर दूसरा छाती से बलबीर।

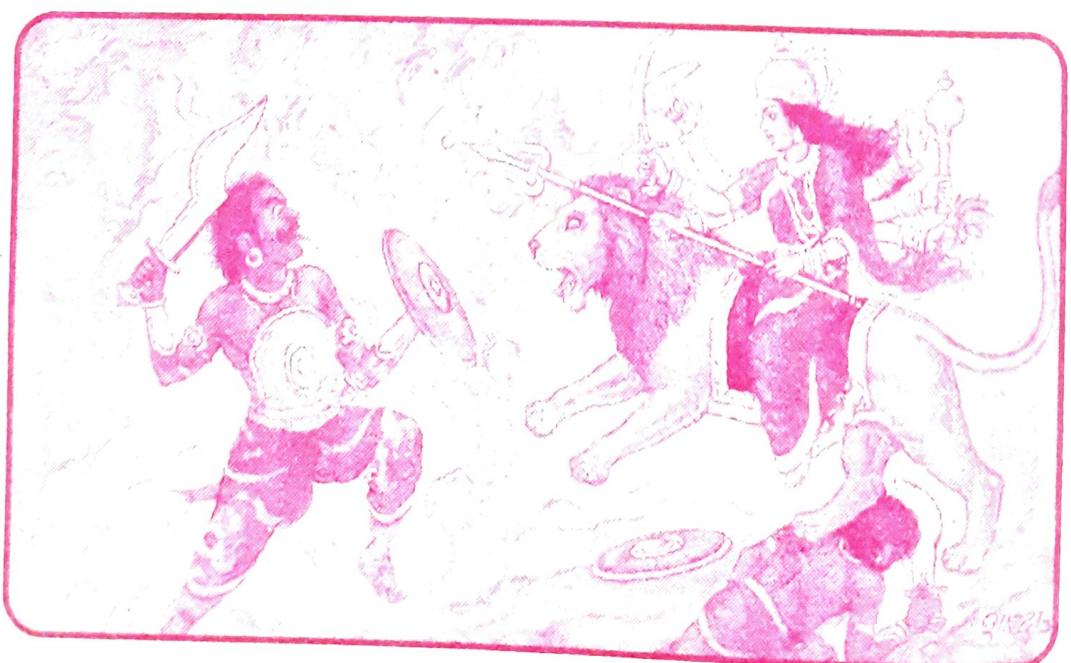
बढ़ा वह दुर्गा की तरफ हाथ लिये हथियार।

खड़ग लिए चण्डी बढ़ी किया दैत्य संहार।

शिवदूती ने खा लिए सेना के सब वीर। 
 कौमारी छोड़े तभी धनुष से लाखों तीर।
 ब्रह्माणी ने मन्त्र पढ़ फैका उन पर नीर।
 भर्म हुई सेना सभी देवन बांधा धीर।
 सेना सहित निशुम्भ का हुआ रण में संहार।
 त्रिलोकी में मच गया मां का जय जय कार।
 'चमन' नवम् अध्याय की कथा कही सुखसार।
 पाठ मात्र से ही मिटे भीष्ण कष्ट अपार।

लेखन द्वारा
मासिका
संस्कार

दसवां अध्याय



तोहा:- ऋषिराज कहने लगे मारा गया निशुम्भ।
 क्रोध भरा अभिमान से बोला भाई शुम्भ।

अरी चतुर दुर्गा तुझे लाज जरा न आए।

करती है अभिमान तू बल औरों का पाए।

 जगदाती बोली तभी दुष्ट तेरा अभिमान।

मेरी शक्ति को भला सके कहां पहचान।

मेरा ही त्रिलोक में है सारा विस्तार। नेत्रन तम
प्रसादोऽपि
विकृतः

मैंने ही उपजाया है यह सारा संसार। विकृतः

चण्डी, काली, ऐन्द्री, सब ही मेरा रूप।

एक हूं मैं ही अम्बिका मेरे सभी सवरुप।

मैं ही अपने रूपों में इक जान हूं।

अकेली महा शक्ति बलवान हूं।

चढ़ी सिंह पर दाती ललकारती।

भयानक अति रूप थी धारती।

बढ़ा शुभ आगे गरजता हुआ।

गदा को घुमाता तरजता हुआ।

तमाशा लगे देखने देवता।

अकेला असुर राज था लड़ रहा।

अकेली थी दुर्गा इधर लड़ रही।

वह हर वार पर आगे थी बढ़ रही।

असुर ने चलाए हजारों ही तीर।

जरा भी हुई न वह मैथ्या अधीर।

तभी शुभ ने हाथ मुगदर उठाया।

असुर माया कर दुर्गा पर वह चलाया।



तो चक्र से काटा भवानी ने वो।
गिरा धरती पे हो के वह टुकड़े दो।

उड़ा शुभ आकाश में आ गया।
वह ऊपर से प्रहार करने लगा।
तभी की भवानी ने ऊपर निगाह।
तो मस्तक का नेत्र वहीं खुल गया।

हुई ज्वाला उत्पन्न बनी चण्डी वो।
उड़ी वायु में देख पाखण्डी को।
फिर आकाश में युद्ध भयंकर हुआ।
वहां चण्डी से शुभ लड़ता रहा।

ज्ञान संस्कृत
ग्रन्थालय
ज्ञान

दोहा:- मारा रण चण्डी ने तब थप्पड़ एक महान।
हुआ मूर्छित धरती पे गिरा शुभ बलवान।
जल्दी उठकर हो खड़ा किया घोर संग्राम।
दैत्य के उस पराक्रम से कांपे देव तमाम।
बढ़ा क्रोध में अपना मुँह खोल कर।
गर्ज कर भयानक शब्द बोल कर।

लगा कहने कच्चा चबा जाऊंगा।
निशां आज तेरा मिटा जाऊंगा।
क्या सन्मुख मेरे तेरी औकात है।
तरस करता हूं नारी की जात है।
मगर तूने सेना मिटाई मेरी।
अग्न क्रोध तूने बढ़ाई मेरी।



मेरे हाथों से बचने न पाओगी।
मेरे पांवों के नीचे पिस जाओगी।

यह कहता हुआ दैत्य आगे बढ़ा।
भवानी को यह देख गुस्सा चढ़ा।

चलाया वो त्रिशूल ललकार कर। अज्ञात अवधारणा
गिरा कट के सिर दैत्य का धरती पर। ज्ञान

किया दुष्ट असुरों का मां ने संहार।
सभी देवताओं ने किया जय जय कार।

खुशी से वे गन्धर्व गाने लगे।
नृत्य करके मां को रिझाने लगे।

'चमन' चरणों में सिर झुकाते रहें।
वे वरदान मैथ्या से पाते रहें।

यही पाठ है दसवें अध्याय का।
जो प्रीति से पढ़ श्रद्धा से गाएगा।

वह जगदम्बे की भक्ति पा जाएगा।
शरण में जो मैथ्या की आ जाएगा।

लोक: आध भवानी की कृपा, मनो कामना पाए।

'चमन' जो दुर्गा पाठ को पढ़े सुने और गाए।
कलिकाल विक्राल में जो वाहो कल्याण।
आद्य शक्ति जगजननी का करो प्रेम से ध्यान।
श्री दुर्गा स्तुति का करो पाठ 'चमन' दिन रैन।
कृपा से आद भवानी की मिलेगा सच्चा चैन।

ग्यारहवाँ अध्याय



ऋषिराज कहने लगे सुनो ऐ पृथ्वी नरेश।
महा असुर संहार से मिट गए सभी क्लेश।
इन्द्र आदि सभी देवता टली मुसीबत जान।
हाथ जोड़कर अम्बे का करने लगे गुणगान।

तू रखवाली मां शरणागत की करे।

तू भक्तों के संकट भवानी हरे।

तू विश्वेश्वरी बन के है पालती।

शिवा बन के दुःख सिर से है टालती।

तू काली बचाए महाकाल से।

तू चण्डी करे रक्षा जंजाल से।

तू ब्रह्माणी बन रोग देवे मिटा।

तू तेजोमयी तेज देती बढ़ा।



तू माँ बनके करती हमें प्यार है।

तू जगदम्बे बन भरती भण्डार है।

जगत् लक्ष्मी अवदाता कृपा से तेरी मिलते आराम है।

हे माता तुम्हें लाखों प्रणाम है।

तू ऋयनेत्र वाली तू नारायणी।

तू अम्बे महाकाली जगतारणी।

गुणों से है पूर्ण मिटाती है दुःख।

तू दासों को अपने पहुंचाती है सुख।

चढ़ी हंस वीणा बजाती है तू।

तभी तो ब्रह्माणी कहलाती है तू।

वाराही का रूप तुमने बनाया।

बनी वैष्णवी और सुदर्शन चलाया।

तू नरसिंह बन देत्य संहारती।

तू ही वेदवाणी तू ही समृति।

कई रूप तेरे कई नाम है।

हे माता तुम्हें लाखों प्रणाम हैं।

तू ही लक्ष्मी श्रद्धा लज्जा कहावे।

तू काली बनी रूप चण्डी बनावे।

तू मेघा सरस्वती तू शक्ति निद्रा।

तू सर्वेश्वरी दुर्गा तू मात इन्द्रा।



तू ही नैना देवी तू ही मात ज्वाला।

तू ही चिन्तपुर्णी तू ही देवी बाला।

चमक दामनी में है शक्ति तुम्हारी।

तू ही पर्वतों वाली माता महतारी।

तू ही अष्टभुजी माता दुर्गा भवानी।

तेरी माया मैथ्या किसी ने न जानी।

तेरे नाम नव दुर्गा सुखधाम हैं।

हे माता तुम्हें लाखों प्रणाम हैं।

तुम्हारा ही यश वेदों ने गाया है।

तुझे भक्तों ने भक्ति से पाया है।

तेरा नाम लेने से टलती बलाएं।

तेरे नाम दासों के संकट मिटाएं।

तू महांमाया है पापों को हरने वाली।

तू उद्धार पतितों का है करने वाली।

दोहा:- स्तुति देवों की सुनी माता हुई कृपाल।

हो प्रसन्न कहने लगी दाती दीन दयाल।

सदा दासों का करती कल्याण हूँ।

मैं खुश हो के देती यह वरदान हूँ।

जबी पैदा होंगे असुर पृथ्वी पर।

तभी उनको मारूंगी मैं आन कर।

मैं दुष्टों के लहू का लगाऊंगी भोग।

तभी रक्तदन्ता कहेंगे यह लोग।

बिना गर्भ अवतार धारुंगी मैं।
तो शत आक्षी बन निहारुंगी मैं।

ज्ञानसंकलन
प्रसादात्
लक्षणः बिना वर्षा के अन्न उपजाऊंगी।
अपार अपनी शक्ति मैं दिखलाऊंगी।

हिमालय गुफा में मेरा वास होगा।
यह संसार सारा मेरा दास होगा।

मैं कलियुग में लाखों फिरुं रूप धारी।
मेरी योगनियां बनेगीं बिमारी।

जो दुष्टों के रक्तों को पिया करेंगी।
यह कर्मों का भुगतान किया करेंगी।

दोहा:- 'चमन' जो सच्चे प्रेम से शरण हमारी आए।
उसके सारे कष्ट मैं दूंगी आप मिटाए।
प्रेम से दुर्गा पाठ को करेगा जो प्राणी।
उसकी रक्षा सदा ही करेंगी महारानी।
बढ़ेगा चौदह भवन में उस प्राणी का मान।
'चमन' जो दुर्गा पाठ की शक्ति जाय जान।
एकादश अध्याय में स्तुति देवन कीन।
अष्टभुजी मां दुर्गा ने सब विपत्ता हर लीन।
भाव सहित इसको पढ़ो जो चाहे कल्याण।
मुंह मांगा देती 'चमन' है दाती वरदान।



बारहवां अध्याय

ब्रह्मस्तुत
ग्रन्थालय
काशी



द्वादश अध्याय मे है मां का आर्शीवाद।
सुनो राजा तुम मन लगा देवी देव संवाद।

महालक्ष्मी बोली तभी करे जो मेरा ध्यान।
निशदिन मेरे नामों का जो करता है गान।
बाधाएं उसकी सभी करती हूँ मैं दूर।
उसके ग्रह सुख सम्पत्ति भरती हूँ भरपूर।

आष्टमी नवमी चतुर्दशी करके एकाग्रचित।
मन क्रम वाणी से करे पाठ जो मेरा नित।
उसके पाप व पापों से उत्पन्न हुए क्लेश।
दुःख दरिद्रता सभी मैं करती दूर हमेश।

प्रियजनों से होगा न उसका कभी वियोग।
उसके हर इक काम मैं दूंगी मैं सहयोग।
शत्रु, डाकू, राजा और शत्रु से बच जाये।
जल में वह डूबे नहीं न ही अग्नि जलाये।

भक्ति पूर्वक पाठ जो पढ़े या सुने सुनाए।
महामारी बिमारी का कष्ट न कोई आए।



जिस घर मे होता रहे मेरे पाठ का जाप।
उस घर की रक्षा करुं मेट सभी संताप।
ज्ञान चाहे अज्ञान से जपे जो मेरा नाम।
हो प्रसन्न उस जीव के करुं मैं पूरे काम।

नवरात्रों में जो पढ़े पाठ मेरा मन लाए।
बिना यत्न कीने सभी मनवांछित फल पाए।
पुत्र पौत्र धन धाम से करुं उसे सम्पन्न।
सरल भाषा का पाठ जो पढ़े लगा कर मन।

बुरे स्वप्न ग्रह दशा से दूंगी उसे बचा।
पढ़ेगा दुर्गा पाठ जो श्रद्धा प्रेम बढ़ा।
भूत प्रेत पिशाचनी उसके निकट न आए।
अपने दृढ़ विश्वास से पाठ जो मेरा गाए।

निर्जन वन सिंह व्याघ से जान बचाऊं आन।
राज्य आज्ञा से भी न होने दूं नुकसान।
भंवर से भी बाहर करुं लम्बी भुजा पसार।
'चमन' जो दुर्गा पाठ पढ़ करेगा प्रेम पुकार।
संसारी विपत्तियां देती हूं मैं टाल।
जिसको दुर्गा पाठ का रहता सदा ख्याल।

श्री दुर्गा स्तुति
मारदूर्जा
कल्प



मैं ही ऋद्धि सिद्धि हूं महाकाली विक्राल।
मैं ही भगवती चण्डिका शक्ति शिवा विशाल।

भैरों हनुमत मुख्य गण हैं मेरे बलवान।
दुर्गा पाठी पे सदा करते कृपा महान।
इतना कह कर देवी तो हो गई अन्तर्ध्यान।
सभी देवता प्रेम से करने लगे गुणगान।

पूजन करे भवानी का मुँह मांगा फल पाए।
'चमन' जो दुर्गा पाठ को नित श्रद्धा से गाए।
वरदाती का हर समय खुला रहे भण्डार।
इच्छित फल पाए 'चमन' जो भी करे पुकार।

इककीस दिन इस पाठ को कर ले नियम बनाए।
हो विश्वास अटल तो वाक्य सिद्ध हो जाए।
पन्द्रह दिन इस पाठ में लग जाए जो ध्यान।
आने वाली बात को आप ही जाए जान।

नौ दिन श्रद्धा से करे नव दुर्गा का पाठ।
नवनिधि सुख सम्पत्ति रहे वो शाही ठाठ।
सात दिनों के पाठ से बलबुद्धि बढ़ जाए।
तीन दिनों का पाठ ही सारे पाप मिटाए।

मंगल के दिन माता के मन्दिर करे ध्यान।
'चमन' जैसी मन भावना वैसा हो कल्याण।

शुद्धि और सच्चाई हो मन में कपट न आए।
तज कर सभी अभिमान न किसी का मन कल्पाए।

सब का ही कल्याण जो मांगेगा दिन रैन।
काल कर्म को परख कर करे कष्ट को सहन।
रखे दर्शन के लिए निस दिन प्यासे नैन।
भाग्यशाली इस पाठ से पाए सच्चा चैन।
द्वादश यह अध्याय है मुक्ति का दातार।
'चमन' जीव हो कर निडर उतरे भव से पार।

तेरहवां अध्याय



ऋषिराज कहने लगे मन में अति हर्षाए।
तुम्हें महात्म देवी का मैंने दिया सुनाए।
आदि भवानी का बड़ा है जग में प्रभाओ।
तुम भी मिल कर वैश्य से देवी के गुण गाओ।



शरण में पड़ो तुम भी जगदम्बे की।
करो श्रद्धा से भक्ति मां अम्बे की।

यह मोह ममता सारी मिटा देवेगी।
सभी आस तुम्हारी पुजा देवेगी।
तुझे ज्ञान भक्ति से भर देवेगी।
तेरे काम पूरे यह कर देवेगी।

ब्रह्मनन्द
अमरद्वारा
अनन्द सभी आसरे छोड़ गुण गाइयों।
भवानी की ही शरण में आइयो।
स्वर्ग मुक्ति भक्ति को पाओगे तुम।
जो जगदम्बे को ही ध्याओगे तुम।

तेजः चले राजा और वैश्य यह सुनकर सब उपदेश।
अराधना करने लगे बन में सहें क्लेश।
मारकंडे बोले तभी सुरथ कियो तप घोर।
राज तपस्या का मचा चहूं और से शोर।
नदी किनारे वैश्य ने डेरा लिया लगा।
पूजने लगे मिट्टी की प्रतिमा शक्ति बना।
कुछ दिन खा फल फूल को किया तभी निराहार।
पूजा करते ही दिये तीनों वर्ष गुजार।
हवन कुंड में लहू को डाला काट शरीर।
रहे शक्ति के ध्यान में हो कर अति गंभीर।

हुई चण्डी प्रसन्न दर्शन दिखाया।
महा दुर्गा ने वचन मुँह से सुनाया।



मैं प्रसन्न हूं मांगों वरदान कोई।
जो मांगोगे पाओगे तुम मुझ से सोई।
कहा राजा ने मुझ को तो राज चाहिए।
मुझे अपना वही तख्त ताज चाहिए।

ज्ञानलक्ष्मी भगवद्गीता
मुझे जीतने कोई शत्रु न पाए।
कोई वैरी मां मेरे सन्मुख न आए।
कहा वैश्य ने मुझ को तो ज्ञान चाहिए।
मुझे इस जन्म में ही कल्याण चाहिए।

दोहा:- जगदम्बे बोली तभी राजन भोगो राज।
कुछ दिन ठहर के पहनोगे अपना ही तुम ताज।
सूर्य से लेकर जन्म सावीर्णक होगा तब नाम।
राज करोगे कल्प भर, ऐ राजन सुखधाम।
वैश्य तुम्हें मैं देती हूं ज्ञान का वह भण्डार।
जिसके पाने से ही तुम होगे भव से पार।
इतना कहकर भगवती हो गई अन्तर्ध्यान।
दोनों भक्तों का किया दाती ने कल्याण।
नव दुर्गा के पाठ का तेरहवां यह अध्याय।
जगदम्बे की कृपा से भाषा लिखा बनाय।
माता की अद्भुत कथा 'चमन' जो पढ़े पढ़ाय।
सिंह वाहिनी दुर्गा से मन वांछित फल पाए।

ब्रह्मा विष्णु शिव सभी धरें दाती का ध्यान ।
 शक्ति से शक्ति का ये मांगे सब वरदान ।
 अम्बे आध भवानी का यश गावे संसार ।
 अष्टभुजी मां अम्बिके भरती सदा भण्डार ।
 दुर्गा स्तुति पाठ से पूजे सब की आस ।
 सप्तशती का टीका जो पढ़े मान विश्वास ।
 अंग संग दाती फिरे रक्षा करे हमेश ।
 दुर्गा स्तुति पढ़ने से मिटते 'चमन' क्लेश ।

श्री भगवती नाम माला



एक दिन वट वृक्ष के नीचे थे शंकर ध्यान में।
सती की आवाज आई मीठी उनके कान में।
दुनियां के मालिक मेरे अविनाशी भण्डारी हो।
देवन के महादेव हो त्रिशूल डमरु-धारी हो।
विनय सुनकर मेरी भगवान दया तो दिखलाइए।
भगवती की नाम माला मुझ को भी बतलाइए।

इतना सुनकर मुस्कराकर तब बोले गिरिजा पति।
अपने नामों की ही महिमा सुनना चाहती हो सती।
तो सुनो यह नाम तेरे जो मनुष्य भी गायेगा।
दुनियां में भोगेगा सुख अन्त मुक्ति पायेगा।
नाम जो स्तोत्र तुम्हारा मन्त्र इक सौ आठ का।
जो पढ़ेगा फल वो पाये सो दुर्गा पाठ का।

लो सुनाता हूं तुम्हें कितने पवित्र नाम है।
जिसके पढ़ने सुनने से होते पूर्ण काम है।



उमा ईन नामों को जो भी मेरे सनमुख गायेगा।
मैं भरुं भण्डारे उसके मांगेगा जो पाएगा।

सती, साध्वी, भवप्रीता, जय भव मोचनी, भवानी जै।
दुर्गा, आर्या जय त्रयलोचनी, शुलेश्वरी महारानी जै।
चन्द्रघण्टा, महातपा, विचित्रा मनपिनाक धारनी जै।
सत्यानन्द, सवरुपनी, सती भक्तन कष्टनिवारणी जै।
चेतना, बुद्धि, चित-रूपा, चिन्ता, अहंकार निवारणी जै।
सर्वमंत्र माया, भवानी, भव्या, मानुष जन्म संवारणी जै।
तू अनन्ता, भव्या, अभव्या, देव माता, शिव प्यारी है।
दक्ष यज्ञ विनाशनी, तू सुर सुन्दरी दक्ष कुमारी है।
तू काली, महांकाली, चण्डी, ज्वाला, नैना दाती है।
चामुण्डा, निशुभ्म विनाशनी, दुःख दानव की घाती है।
कन्या कौमारी, किशोरी, महिषासुर को मार दिया।
चण्ड मुण्ड नाशिनी, जै बाला दुष्टों का संहार किया है।

शस्त्र वेदज्ञाता, जगत जननी खण्डा धारती है।
संकट हरनी मंगल करनी, तू दासों को तारती है।
कल्याणी, विष्णु माया, तू जलोधरी, परमेश्वरी जै।
भद्रकाली, प्रतिपालक, शक्ति जगदम्बे जगदेश्वरी जै।
तू नारायणी 'चमन' की रक्षा वैष्णवी ब्रह्माणी तू।

वायु निंद्रा अष्टभुजी सिंहवाहनी सब सुखदानी तू।
ऐन्द्री, कैशी, अग्नि, मुक्ति, शिवदूती कहलाती हो।
रुद्रमुखी, प्रौढ़ा महेश्वरी, ऋद्धि सिद्धि बन जाती हो।

दुर्गा जगदम्बे महामाया कन्या आध कंवारी तू।
अन्नपूर्णा चिन्तपूर्णी, शीतला शेर सवारी तू।
पाटला, पाटलावति कूषमांडा पिताम्बर धारनी जै।
कात्यायनी, जै लक्ष्मी वाराही भाग्य संवारनी जै।

सर्वव्यापनी जीव जन्म दाता तू पालनहारी है।
कर्ता धर्ता हर्ता मैथ्या तेरी महिमा न्यारी है।
तेरे नाम अनेक हैं दाती कौन पार पा सकता है।
तेरी दया से 'चमन' भवानी गुण तेरे गा सकता है।

जगत माता महारानी अम्बे एक सौ आठ ये नाम।
 'चमन' पढ़े सुने जो श्रद्धा से पूरे हो सब काम।

पुस्तकें वितर्ण करने का पुण्य सब से अधिक माना
गया है। श्रद्धा पूर्वक पाठ करने वाले का फल प्रत्यक्ष रूप से
कुछ भाग पुस्तकें वितर्ण करने वाले को अवश्य मिलता है।

बृज भारद्वाज

माँ जगदम्बे जी की आरती



आरती जग जननी तेरी गाऊँ।

तुम बिन कौन सुने वरदाती।

किसको जाकर विनय सुनाऊँ। आरती.....

असुरों ने देवों को सताया।

तुमने रूप धरा महा माया।

उसी रूप के दर्शन चाहूँ। आरती.....

रक्तबीज मधु कैटभ मारे।

अपने भक्तों के काज संवारे।

मैं भी तेरा दास कहाऊँ। आरती.....

आरती तेरी करुं वरदाती।

हृदय का दीपक नैनों की बाती।

निसदिन प्रेम की जोत जगाऊँ। आरती.....

ध्यानूं भक्त तुमरा यश गाया।

जिस ध्याया माता फल पाया।

मैं भी दर तेरे सीस झुकाऊँ। आरती.....

आरती तेरी जो कोई गावे।

'चमन' सभी सुख सम्पत्ति पावे।

मैथ्या चरण कमल रज चाहूँ। आरती.....